खुरपका मुँहपका रोग (एफ0एम0डी0) के नियंत्रण में पशुपालक की महत्वपुर्ण भुमिका

खुरपका मुँहपका रोग (एफ0एम0डी0) गाय, भैस, सुअर, बकरी, भेड. एवं कुछ वन्य पशु में होने वाला एक अत्याधिक संक्रामक रोग है, खासकर दुधारू गाय एवं भैंस में। यह रोग एक अत्यंत सूक्ष्म विषाणु से होता है। यह पशुओं में अत्याधिक तेजी से फैलने वाला रोग है, तथा कुछ समय में एक झुंड या पूरे गाँव के अधिकतर पशुओं को संक्रामित कर देता है। इस रोग से पशुधन उत्पादन में भारी कमी आती है साथ ही देश से पशु उत्पादों के निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस बिमारी से अपने देश में प्रतिवर्ष लगभग 20 हजार करोड रूपये की प्रत्यक्ष नुकसान होती है।

रोग लक्षण

- तीव्र ज्वर (102-105°F), साधारणतः छोटे पशु में यह जानलेवा होता है परंतु वयस्क पशु में नही, पशुओं की मृत्यु प्रायः गलाघोटु रोग के होने से होता है। मुख से अत्याधिक लार का टपकना।
- जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते है।
- जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना।
- खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है।
- मुँह में घावों कि वजह से पशु भोजन लेना तथा जुगाली करना बंद कर देता है एवं कमजोर हो जाता है।
- दुध उत्पादन में लगभग 80 प्रतिशत की कमी, गाभिन पशुओं में गर्भपात एवं बच्चा मरा हुआ पैदा हो सकता है।
- बछड़ों, में अत्याधिक ज्वर आने के पश्चात बिना किसी लक्षण की मृत्यु होना।

खुरपका मुँहपका रोग से प्रभावित गाय एवं भैंस के घाव (मुँह, खुर एवं छिमी)

रोकथाम के उपाय

इस रोग का उपचार अब तक संभव नहीं हो सका है, इसलिए रोकथाम ही सबसे कारगर नियंत्रण का उपाय है। सभी किसान/पशुपालक को अब इस रोग के प्रति जागरूकता दिखाने की आवश्यकता है तभी इस रोग का रोकथाम संभव है।

- पशुपालको को अपने सभी पशुओं (चार महीने से ऊपर) को टीका लगवाना चाहिए। प्राथमिक टीकाकरण के चार सप्ताह के बाद बूस्टर खुराक दिया जाना चाहिए और हर 6 महीने में नियमित टीकाकरण करना चाहिए।
- प्रत्येक पशु को 6 महीने में एक बार कृमि नाशक दवा जैसे–कि फेनबेनडाजोल, आईवरमेक्टिन देना चाहिए।
- नये पशुओं को झुंड या गाँव में मिश्रित करने से पूर्व उसकी जाँच आवश्यक है। इन नए पशुओं को कम से कम चौदह दिनों तक अलग बाँध कर रखना चाहिए तथा भोजन एवं अन्य प्रबन्धन भी अलग से ही करने चाहिए।
- पशुओं को पूर्ण आहार देना चाहिए जिससे खनिज एवं विटामीन की मात्रा पूर्ण रूप से मिलती रहे।

रोग निदान हेतु नमूना/पदार्थः मुँह, खुर एवं छिमी का घाव, लार, दुध इत्यादि को निकटतम प्रयोगशाला को वर्फ में रखकर जांच हेतु जल्द से जल्द भेजें। यदि संभव हुआ तो मुँह, खुर एवं छिमी के घाव को 50% बफर ग्लिसेरीन में रखकर भेजे।

उपचार

मुँह में बोरो ग्लिसेरीन लगाए। शहद एवं मडूआ या रागी के आटा को मिलाकर लेप बनाए एवं मुँह में लगाए। ज्वरनाशी एवं दर्दनाशक का प्रयोग करे। जिस पशु के मुँह, खुर एवं छिमी में घाव हो उसको 3 या 5 दिन तक प्रतिजैविक का सुई लगाए। खुर के घाव में हिमैक्स या नीम के तेल का प्रयोग करे एवं कीड़े लगने पर तारपीन तेल का प्रयोग करें। इसके अलावा रागी एवं गेहुं का आटा, चावल के बराबर मात्रा को पकाकर तथा उसमें गुड़ या शहद, खनिज मिश्रण को मिलाकर पशु को नियमित दें।

(पशुचिकित्सक की परामर्श पर ग्रसित जानवरों का उपचार करें)

भारतवर्ष में विकसित खुरपका मुँहपका रोग के जाँच में उपयोग होनेवाली कीट

किसी एक गाँव/क्षेत्र में खुरपका मुँहपका रोग प्रकोप के समय क्या करें, क्या नही करें ?

क्या करें

1. निकटतम सरकारी पशुचिकित्सा अधिकारी को सूचित करना चाहिए।
2. प्रभावित पशुओं के रोग का पता लगने पर तुरंत उसे अलग करना चाहिए।
3. प्रारंभिक चरण के प्रकोप में बचे पशुओं में, संक्रमित गांव/क्षेत्र के आसपास, रोग के आगे प्रसार को रोकने के लिए वृत्त टीकाकरण (टीकाकरण की शुरूआत स्वस्थ पशुओं में बाहर से अंदर) करना चाहिए तथा टीकाकरण के दौरान प्रत्येक पशु के लिए अलग–अलग सुई का प्रयोग करें तथा इस दौरान बीमार पशु को नही छुएं ।
4. टीकाकरण के 15 से 21 दिनो के बाद ही पशुओं को गांव में लाना चाहिए।
5. दुध निकालने के पहले आदमी को हाथ एवं मुँह साबुन से धोना चाहिए तथा अपना कपड़ा बदलना चाहिए।
6. बीमारी को फैलने से बचाने के लिए पूरे प्रभावित क्षेत्र को 4 प्रतिशत सोडियम कोर्बोनेट (Na_2CO_3) घोल (400 ग्राम सोडियम कार्बोनेट 10 लीटर पानी में) या 2 प्रतिशत NaOH से दिन में दो बार धोना चाहिए एवं इस प्रक्रिया को दस दिन तक दोहराना चाहिए।
7. स्वस्थ एवं बीमार पशु को अलग–अलग रखना चाहिए।
8. बीमार पशुओं को स्पर्श करने के बाद व्यक्ति को 4 प्रतिशत सोडियम कार्बोनेट घोल के साथ खुद को, जुते एवं चप्पल, कपड़े आदि धोने चाहिए।
9. समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दूध इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किये बर्तन एवं दूध के डिब्बे को 4 प्रतिशत सोडियम कोर्बोनेट घोल से सुबह और शाम धोने के बाद ही उन्हें गांव से बाहर भेजना चाहिए।
10. इस प्रकोप को शांत होने के बाद इस प्रकिया को एक महीने तक जारी रखा जाना चाहिए।

क्या नहीं करें

1. सामुहिक चराई के लिए अपने पशुओं को नहीं भेजें, अन्यथा स्वस्थ पशुओं में रोग फैल सकता है।
2. पशुओं को पानी पीने के लिए आम स्रोत जैसे कि तालाब, धाराओं, नदियो से सीधे उपयोग नहीं करना चाहिए, इससे बीमारी फैल सकता है। पीने के पानी में 2 प्रतिशत सोडियम बाइकोर्बोनेट घोल मिलाना चाहिए।
3. रोगग्रस्त पशुओं को अन्य पशुओं के साथ न आने दे।
4. लोगों को गांव के बाहर आने–जाने के द्वारा रोग फैल सकता है। संक्रमित गांव के बाहर 10 फिट चौड़ा ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव करना चाहिए।
5. वे स्वस्थ पशुओं के साथ संपर्क में नहीं जाए, खेतों तथा स्थानों पर जहाँ पशुओं को रखा जाता है वहाँ जाने से बचना चाहिए।
6. प्रभावित क्षेत्र से पशुओं की खरीदी न करें।

सम्पर्क करें

परियोजना निदेशालय खुरपका मुँहपका रोग

PROJECT DIRECTORATE ON FOOT AND MOUTH DISEASE

INSTITUTE OF FMD

FAO Regional Leading Diagnostic Laboratory for SAARC

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

Mukteswar-263 138, Uttarakhand, India

ई–मेलः pdfmd111@gmail.com, pattnaikb@gmail.com, फोन नः 05942 286004, फैक्सः 05942 286307 – डा. राजीव रंजन, वैज्ञानिक

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

FAO Reference Centre for Foot and Mouth Disease

OIE/FAO Global Foot and Mouth Disease Reference Laboratories Network Regional Centre- India